डॉ. अर्जुन चव्हाण
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४११ ६००४

॥ संस्तुति ॥

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस शोध - प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर

(डॉ. अर्जुन चव्हाण)
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

तिथि : 5 FEB 2003

प्रा.डॉ.वाय्.बी. धुमाळ
एम.ए.पी एच.डी.
रीडर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
वेणूताई चव्हाण कॉलेज, कराड
जि. सातारा (महाराष्ट्र)

।। प्रमाणपत्र ।।

मैं प्रमाणित करता हूँ कि, कु. शैलजा दिनकर कांबळे ने शिवाजी विश्वविदयालय की एम.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लघु शोध-प्रबंध ''मैत्रेयी पुष्पा के कहानियों का अनुशीलन (चिन्हार और ललमनियों के विशेष संदर्भ में)'' मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह कार्य पूर्व योजना नुसार संपन्न हुआ है। यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है। कु. शैलजा दिनकर कांबळे के प्रस्तुत शोधकार्य के बारे में पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

स्थान: कराड

तिथि : 5 FEB 2003

शोध निर्देशक

(डॉ. वाय. बी. धुमाळ)

प्रा. डॉ. वाय. बी. धुमाळ
रीडर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
वेणूताई चव्हाण कॉलेज
कराड (महाराष्ट्र)

॥ प्रख्यापन ॥

यह लघुशोध - प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल्. के लघु-शोध प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस या अन्य किसी विश्वविदयालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है।

स्थान : कोल्हापुर

शोध - छात्र

Kamble.

(कु. शैलजा दिनकर कांबळे)

तिथि : 5 FEB 2003

24-9-2003

प्राक्कथन

''स्त्री और पुरूष'' निसर्ग निर्मित दो मनुष्यजातियाँ। ये दोनों भी एक दूजे का साथ निभाये, साथ-साथ रहे, निसर्ग और समाज का धर्म निभाकर समाज का प्रवाह अखंडित रूप से प्रवाहित रखे यह निसर्ग का संकेत है। लेकिन इनमें से केवल स्त्री के संबंध में ही हजारों सवालों का निर्माण होता है वह क्यों ? स्त्री स्वातंत्र्य, स्त्री का स्थान, स्त्री का महत्त्व, स्त्री के अधिकार, स्त्री पर होनेवाले अत्याचार, स्त्री के प्रति सामाजिक दृष्टिकोन आदि सवाल तथा इन सवालों में से निर्मित समस्याएँ केवल नारी के संबंध में ही क्यों निर्माण होती हैं ? इसके क्या कारण हो सकते हैं ? आज की नारी इस शोषण को समझ रही है, और इससे मुक्त भी होना चाहती है। नारी यह कोशिश, नारी 'जागरण', नारी मुक्ति आंदोलन तथा 'साहित्य' द्वारा कर रही है। स्त्री के मनोभावों को समझकर, उसकी समस्यायों को कहानियों में पिरोने का कार्य बहुत-सी महिला कथाकारों ने किया है। लेकिन कुछ पुरूष रचनाकार और आलोचक द्वारा महिला कथाकारों पर यह आरोप लगाया जात है कि, परिवार के सीमित दायरे में संबंधों और मूल्यों के बदलाव को व्यक्त करनेवाला लेखन है, जिसमें काम संबंधों को खास तौर पर लिया गया है या उनका लेखन दोयम दर्जे का होता है अर्थात् कहने मात्र से रचनाक्रम दुय्यम दर्जे का नहीं होता। आजकल तो महिला कथाकारों ने अपने लेखन कार्य से अपना विशिष्ट स्थान तथा अपना विशिष्ट वर्ग निर्माण किया है, ये तो नि:संशय गर्व की बात है। महिला कथाकारों का साहित्य सृजन जितनी मात्रा में हो रहा है उसकी तुलना में, उसी साहित्य पर अनुसंधान का कार्य बहुत कम मात्रा में हुआ हैं।

नारी होने के नाते नारी विषयक विभिन्न विषयों का चित्रण करनेवाली लेखिकाओं के प्रति आकर्षण स्वाभाविक है। जब मैने मैत्रेयी पुष्पा का साहित्य पढना आरंभ किया तो यह एहसास हुआ ये कहानियाँ झूठ नहीं है, क्योंकि, इसमें चित्रित दर्द, समस्या सार्वत्रिक है। इन सब बातों को ध्यान में लेकर मैने प्रस्तुत विषय का चयन कर लघु शोध प्रबंध पूरा करने का विनम्र प्रयास किया है। समय की पाबंदी तथा स्वयं की मर्यादाओं के कारण प्रस्तुत प्रबंध में कुछ त्रुटियों रहना स्वाभाविक है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का अनुशीलन और ललमनियाँ के विशेष संदर्भ मैं '' विषय लेकर आज तक अध्ययन नहीं हुआ है। उस कमी की पूर्ति के उद्देश्य से यह विषय लेकर प्रस्तुत शोध प्रबंध की रचना की गई है।

मैत्रेयी पुष्पा के कहानी साहित्य का अध्ययन करते समये आपके आधुनिक महिला कहानीकारों की कहानियों का अध्ययन संक्षेप में किया है। मैत्रेयी पुष्पा के समग्र साहित्य का अध्ययन किया है।

प्रथम अध्याय -

मैत्रेयी पुष्पा के 'चिन्हार' और 'ललमनियाँ' कहानी संग्रहों के कथावस्तु का अनुशीलन

इस अध्याय में प्रारंभ में कहानियों में वस्तुतत्व का महत्त्व, घटना विन्यास की दृष्टि से कहानी की वस्तु के लिए आवश्यक तत्व आदि की सैद्धांतिक विवेचना प्रस्तुत कर मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में वस्तुतत्व को जाँचने के लिए उनकी कहानी संग्रह चिन्हार और ललमनियाँ कहानी संग्रह की विवेचना प्रस्तुत कर दी गयी है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय -

मैत्रेयी पुष्पा के 'चिन्हार' और 'ललमनियाँ' कहानी संग्रहों के पात्र एवं चरित्र चरिण का अनुशीलन

इस अध्याय में चरित्र चित्रण का स्वरूप, कहानी की पात्र-योजना, कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्त्व इन बातों को सैद्धांतिक दृष्टि से प्रस्तुत करने के पश्चात मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों के पात्रों की विशेषताएँ जैसे-नारी शिक्षा की चेतना, नारी सोच की नयी दिशा, दापंत्य जीवन के संबंध भ्रष्टाचार, अन्याय अत्याचार का विरोध आदि को लेकर मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों के पात्रों का चरित्र चित्रण किया गया है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय -

मैत्रेयी पुष्पा के 'चिन्हार' और 'ललमनियाँ' कहानी संग्रहों के परिवेश का अनुशीलन

इस अध्याय में परिवेश का स्वरूप, परिवेश के गुण, परिवेश के भेद, परिवेश का महत्त्व कहानियों इन बातों को सैद्धांतिक दृष्टि से प्रस्तुत करने के पश्चात मैत्रेयी पुष्पा के कहानियों परिवेश के अंतर्गत मध्यमवर्गीय परिवार, पारिवारिक माहौल, शहरी जीवन, गाँव का जीवन, राजनीतिक जीवन, मकान का परिवेश, अस्पताल का जीवन, सांस्कृतिक जीवन, कॉलेज जीवन आदि को परखा गया है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

चतुर्थ अध्याय -

मैत्रेयी पुष्पा के 'चिन्हार' और 'ललमनियाँ' कहानी संग्रहों की भाषा शैली का अनुशीलन

इस अध्याय में भाषा के गुण, भाषा के विविध रूप, भाषा का महत्त्व, शैली गुण, कहानी की प्रमुख शैलियाँ, शैली का महत्त्व इन बातों को सैद्धांतिक दृष्टि से प्रस्तुत करने के पश्चात् इंग्रजी, देशज, अरबी, फारसी, संस्कृत आदि भाषाओं के शब्दों का उल्लेख किया गया है। वर्णनात्मक आत्मकथनात्मक, विश्लेषणात्मक, संवादात्मक, पत्रात्मक, काव्यात्मक, स्मृतिपरक आदि भाषाशैली को परखा गया है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

पंचम अध्याय -

मैत्रियी पुष्पा के 'चिन्हार' और 'ललमनियाँ' कहानियों के उद्देश्य का अनुशीलन

इस अध्याय में उद्देश्य के आधार पर मैत्रेयी पुष्पा के कहानियों का उद्देश्य को जाँचा गया है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

षष्ठ अध्याय -

मैत्रेयी पुष्पा के 'चिन्हार' और 'ललमनियाँ' कहानी संग्रहों की समस्याओं का अनुशीलन

इस अध्याय में नारी समस्या, प्रेम समस्या, अकेलेपन की समस्या, दापंत्य समस्या, नारी शिक्षा समस्या, सामाजिक संकीर्ण समस्या, भ्रष्टाचार समस्या, चुनाव समस्या, आर्थिक समस्या, यौन-समस्या, भ्रष्टाचार समस्या, चूनाव समस्या, आर्थिक समस्या, यौन संबंधी समस्या, मातृत्व समस्या, खोखलेपन दिखावटी रिश्तों की समस्या, निम्न वर्ग की समस्या आदि समस्याओं को प्रस्तुत किया है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

उपसंहार

सभी अध्यायों का निचोड या सार अंत में उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया गया है और अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दे दी है।

उपलब्धियाँ

पूरे लघु शोध-प्रबंध के अध्ययन के पश्चात् निम्नलिखित उपलब्धियाँ मेरे हाथ लगी हैं ।

- मैत्रेयी पुष्पा ने अपने अनुभव पर आधृत रचनाओं का निर्माण अधिक किया है।
- अपने जीवन का असर उनकी कहानियों पर दिखाई देता है।
- संक्षिप्त कथानक, उचित पात्र योजना, आकर्षक आरंभ, कोतुहल वर्धकता, आरंभ विकास, चरमसीमा और अंत मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों को वस्तुगत विशेषताएँ है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत शोध प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले गुरूजनों हितचिंतको एवं आत्मियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

यह लघु-शोध-प्रबंध श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ. यादवराव धुमाळ जी के प्रेरणादायी निर्देशन का फल है। उनके प्रोत्साहन, प्रेरणा तथा स्नेह के कारण यह कार्य पूर्ण हो गया है। अपनी कार्यव्यस्तता के बावजूद भी उन्होंने मेरे अनुसंधान कार्य को निरंतर गतिशील बनाए रखा। उन्होंने मेरी अस्मिता को ज्ञान-दृष्टि दी मुझे जीवन में सजग रहने की प्रेरणा दी इसलिए मैं उनके प्रति आभारी हूँ। गुरू पत्नी सौ. नयना धुमाळ, प्रा. क्षितिज धुमाळ तथा कु. शर्वरी धुमाळ की.भी. मैं आभारी हूँ जिन्होंने मुझे समय-समय पर प्रोत्साहित किया

आदरणीय गुरूवर्य, डॉ. अर्जुन चव्हाण, डॉ. पांडुरंग पाटील, श्री. एल.आर.पाटील (सांगली) डॉ. आर.जी. देसाई (सांगली) डॉ. गायकवाड मॅडम, डॉ. मनियार मॅडम, आदि का समय-समय पर प्राप्त मार्गदर्शन मेरी उम्मीद तथा जिज्ञासा बढाती रही। इन सभी की मैं आभारी हूँ।

इस लघु शोध -प्रबंध की पूर्णता मेरी माता दमयंती,पिता दिनकर,बडी बहन संगीता, बडे भाई संदिप, सचिन, किरण भंडारे, जीजाजी मिलींद,भाभी सुजाता,प्रणव (पलू) जिन्होंने पारिवारिक चिंताओं से मुक्त रखकर मुझे प्रोत्साहित किया है।

मेरे मित्र परिवार के सदस्य दिपाली गायकवाड, अश्विनी भोसले, दिपाली हरगुडे, अनिता कोष्टी, नंदा मोरे, सुप्रीया जोशी, शोभा कवठेकर, अपर्ना जोशी, सविता जाधव, गीता केरीपाळे, सुजाता पाटील, सरोज कांबळे, अर्चना गायकवाड, जितेंद्र कोले, रसीद तहसीलदार, अन्ना हरदारे आदि की भी प्रेरणा तथा प्रोत्साहन मुझे निरंतर मिलता रहा। अतः मैं उनकी भी आभारी हूँ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक पुस्तकें शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के ग्रंथालयों से प्राप्त हो सकी है। मैं शिवाजी विद्यालय के ग्रंथपाल तथा सेवक वर्ग के प्रती अपना अभार प्रकट करती हूँ।

इस प्रबंध का टंकन करनेवाले संतोष पिंपळे की भी मैं आभारी हूँ।

अंत में सभी गुरूजनों, सहदयों, एवं आत्मजनों की प्रेरण ा तथा सदिच्छाओं के लिए पुनश्च धन्यवाद!